1

Dr. Honey Sinha
Assistant professor
Dept. of Commerce
Sub: B.O (Business Organisation)
B.Com part - 1st
SNSRKS College Saharsa

Introduction :- Meaning and forms of Share Capital

(अंश पूंजी से आशय अथवा प्रारूप)

अंश पूंजी का आशय उस धनराशि से है, जिसके द्वारा कंपनी की चालू या अचल सम्पतियाँ क्रय कि जाती है। इसके बिना कोई भी कम्पनी अपना व्यापार प्रारम्भ नहीं कर सकती, क्योंकि वह प्रत्येक प्रकार के व्यापार तथा उद्योग-धन्धों का जीवन-रक्त (Life-blood) कहलाती है। इसके सम्बन्ध में आवश्यक विवरण प्रत्येक कम्पनी के पार्षद सीमानियम में होता है तथा इसके प्राप्त करने के नियमों की व्याख्या अन्तर्नियमों (Articles) में होती है। यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यापार में लगी पूंजी न तो इतनी अधिक होनी चाहिए कि जिससे बहुत-सी पूंजी बेकार पड़ी रहे और पूंजी आधिक्य (Over-capitalisation) के दोष उत्पन्न हो और न पूंजी इतनी कम हो कि पूंजी की कमी के कारण विकसित न किया जा सके और पग-पग पर पूंजी की न्यूनता (Under-capitalisation) का अनुभव हो। चूंकि प्रत्येक कम्पनी की पूंजी अंशों में होती है, अतः वह अंश पूंजी कहलाती है।

* अंश - पूंजी के विभिन्न रूप अथवा प्रारूप

* Forms of share capital :-

(1) अधिकृत पूँजी (Authorized Capital) जिस पूँजी से कम्पनी का पंजीयन कराया जाता है, उसे अधिकृत पूँजी कहते है। इसका वर्णन पार्षद सीमा नियम मे किया जाता है। कम्पनी इस सीमा से अधिक पूँजी निर्गमित नही कर सकती।

(2) निर्गमित पूँजी (Issued Capital) - यह अधिकृत पूँजी का वह भाग है जो जनता को क्रय करने के लिए निर्गमित किया जाता है।

(3) प्रार्थित पूँजी (Subscribed Capital) :- यह निर्गमित पूँजी का वह भाग है जो जनता द्वारा क्रय कर लिया जाता है। प्रत्येक कम्पनी का यह प्रयत्न रहता है कि वह जितनी पूँजी निर्गमित करे, जनता द्वारा प्रार्थित की जाये।

(4) आबंटित पूँजी (Alloted Capital) - यह प्रार्थित पूँजी का वह भाग है जिसके लिये आवेदन पत्र कम्पनी द्वारा स्वीकार कर लिये जाते है।

(5) याचित पूँजी (Called-up Capital) यह आबंटित पूँजी का वह भाग है जो कम्पनी द्वारा अंशधारियो से मांगा जाता है।

(6) चुकता पूँजी (Paid-up Capital) :- यह याचित पूँजी

का वह भाग है जो अंशधारियों द्वारा कम्पनी को भुगतान कर दिया जाता है।

(7) संचित पूँजी (Reserved Capital) यह पूँजी का वह भाग है जो समापन के अतिरिक्त अन्य किसी भी दशा मे नही मांगा जा सकता है।

(8) स्थायी पूँजी (Fixed Capital) यह पूँजी का वह भाग है जिसमे स्थायी सम्पतियों जैसे भूमि, भवन आदि क्रय करती है।

(9) चल पूँजी (Circulating Capital) :- यह पूँजी का वह हिस्सा है जो दैनिक व्ययों के भुगतान मे लगाया जाता है, तथा ऐसे माल के क्रय मे लगाया जाता है जो पुनः विक्रय के लिये है।

(10) कार्यशील पूँजी (Working Capital) चालू सम्पतियो के चालू दायित्वों पर आधिक्य को कार्यशील पूँजी कहा जाता है।

The end

Dr. Honey Sinha
Assistant professor
Dept. of Commerce
SNSRKS College
Saharsa